सहुने सरूप रुदेमां समाणो, आवी आनंद अंग उभराणो।
उलस्या मलवाने अंग, मांहेंथी प्रगट्या उछरंग।। २९ ।।

सभी सखियों के हृदय में वालाजी का स्वरूप समाया और वे आनन्द से भर गईं। सबके मन में अंग से मिलने का उल्लास अन्दर से जागृत हो गया।

वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर।
त्यारे हरख वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनो आधार।। ३० ।।

उन्होंने फिर से जोरदार रामत खेली। गीत गाती हैं और शोर मचाती हैं। उनके हृदय में खुशी बढ़ गई, क्योंकि सखियों के प्राणाधार आ गए। (साक्षात् प्रगट हो गए)

दोडी वलगी वालाने वसेख, जाणे पिउजी हुता परदेस।
सघलीना हैडा मांहें, हाम मलवानी मन मांहें।। ३१ ।।

दौड़कर सभी वालाजी से लिपटीं और ऐसा जाना कि पिया परदेश गए थे। सबके दिल में वालाजी से (अंगों अंग) मिलने की चाह है।

वालेजीए कीधो विचार, केम मलसे सघली नार।
त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक।। ३२ ।।

वालाजी ने विचार किया कि सब सखियों से एक साथ कैसे मिलें? तब उन्होंने एक-एक गोपी से मिलने के लिए उतने ही तन धारण कर लिए।

सखी सहुने मल्या एकांत, रम्या वनमां जुजवी भांत।
वाले पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधे सुख दीधां।। ३३ ।।

सब सखियों से वालाजी वन में इस प्रकार एकान्त में अलग-अलग तरीके से मिले और रामत की तथा सबकी मनोकामना पूर्णकर प्रत्येक सखी को उसकी इच्छानुसार सुख दिए।

इंद्रावतीने आनन्द थाय, उमंग अंग न माय।
वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग।। ३४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के अंग में उमंग नहीं समाती है। वह बड़े आनन्द में हैं कि फिर से उमंग के साथ तरह-तरह से खेलेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ६९३ ।।

चरचरी राग केदारो

उछरंग अंग सुन्दरी, हेत चित मन धरी।
सुख ल्याविया वालो वली, सुख ल्याविया वालो वली।। १ ।।

सखियों के मन में उमंग भरी है और हृदय में स्नेह भरा है। वालाजी फिर से सुख ले आए हैं।

कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी।
बांहें न मूके स्यामतणी, अलगी न जाय कोय टली।। २ ।।

हाथ में हाथ देकर सब उतावली में मिलीं। वालाजी की बांह नहीं छोड़ती हैं और कोई भी अलग नहीं होती है।

Nijanand App

एक एक लिए आलिंघण, एक एक दिए चुमण।
बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली।। ३ ।।

बारी-बारी से वालाजी से चिपटती हैं। चुम्बन देती हैं और गले में हाथ डालकर अपनी कामना पूर्ण करती हैं।

जीवन मन विमासियूं, सखी केम भाजसे खेवना।
आ तां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्यां हलीमली।। ४ ।।

वालाजी ने मन में विचार किया कि सखियों की चाह कैसे पूरी करूं? सखियां तो सागर के प्रवाह के समान मिल-जुलकर चली आ रही हैं।

पछे एक वालो एक सुन्दरी, एम रमूं रंगें रस भरी।
लिए आलिंघण फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली।। ५ ।।

इसलिए वालाजी ने इतने रूप बनाए कि एक-एक गोपी और एक-एक वालाजी बनकर आनन्द में रास खेलने लगे और बार-बार चिपटा-चिपटाकर अंग की तड़प पूरी करने लगे।

विनोद हाँस अतिघणो, वाले वधारियो सुखतणो।
कामनी प्रते कंथ आपणो, एणे सुखे दुख नाख्यां दली।। ६ ।।

बहुत सुख की हंसी का आनन्द वालाजी ने बढ़ा दिया। वालाजी ने ऐसा सुख देकर सखियों का दुःख मिटा दिया।

अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खूंचता।
स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सवली।। ७ ।।

वालाजी को अधरों का रस पीते समय सखियों के स्तन चुभते हैं। सखियां इस प्रकार वालाजी से सुख लेती हैं। यह लीला अति प्रबल है।

साथ मांहें इंद्रावती, वालातणे मन भावती।
रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली।। ८ ।।

सखियों में श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के मन को भाती हैं। वह खेल में अति आनन्द पैदा करती हैं, क्योंकि वह प्रारम्भ से सर्वगुण सम्पन्न हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ७०१ ।।

राग मलार

आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया रे।
कांई उपनू अंग उलास, सुन्दर सुख लाविया रे।। १ ।।

वालाजी दुबारा आ गए हैं, इसलिए हम आनन्द से उनके साथ रास खेलें। उनके आने से दिलों में उमंग बढ़ गई है और वह सुख अधिक ले आए हैं।

सखी दियो रे मांहों मांहें हाथ, वचे जोड लीजिए रे।
स्याम स्यामाजी पाखलवाड, सखियो तणी कीजिए रे।। २ ।।

सखियो! आपस में हाथ मिलाकर श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी को बीच में ले लो। उनको चारों तरफ से घेरे में ले लो।

Nijanand App